3	तना विगलन	रोगरोधी प्रजाति का चुनाव करें जल निकास की समुचित व्यवस्था करें। अरहर की मेंड़ पर बुवाई करें। अरहर को मिश्रित फसल के रूप में उगायें गर्मी में गहरी जुताई करें।
4	धब्बा रोग	बीजोपचार करें।

अरहर में लगने वाले प्रमुख प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

क्र0 स0	रोग का नाम	रोकथाम
1	फली छेदक	•प्रोफेनोफॉस 50 इ0सी0 0.2 प्रतिशत अथवा मेथोमिल 40 एस. 0.02 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें। •कीटों के अण्डे अथवा लार्वा दिखाई देने पर 5 प्रतिशत नीम के बीजों से तैयार अर्क (एनएसकेई) का छिड़काव
2	हेयर केटरपिलर	क्यूनालाफॉस@3 किग्रा0 सक्रिय तत्व/हे0 अथवा मेलाथियान 5 प्रतिशत @ 25 किग्रा0/हे0 की दर से प्रयोग करें।
3	फली बेधक मक्खी	मोनोक्रोटोफॉस 0.04 प्रतिशत अथवा आक्सीडेमेटान मिथाइल 0. 03 प्रतिशत आदि का घोल बनाकर छिड़काव करें।
4.	बीटल	मेलाथियान धूल 5 प्रतिशत अथवा कार्बोरील (10 प्रतिशत) आदि का प्रयोग करें।
5.	प्लूम मोथ	मोनोक्रोटोफॉस .04 प्रतिशत घोलकर छिड़काव करें।

कटाई व मड़ाई

अरहर की प्रजातियों के अनुसार फसल पकने का समय अलग–अलग होता है। कम अवधि अथवा अगेती फसल नवम्बर–दिसम्बर व देर से पकने वाली प्रजातियाँ मार्च–अप्रैल में पक कर तैयार हो जाती है। जब फलियों का रंग हरा से भूरा पीला हो जाये तो फसल की कटाई करना चाहिए। भण्डारण के समय नमी की मात्रा 10–12 प्रतिशत रखें जिससे भण्डारण करते समय कीटों का प्रकोप न हो ।

उपज

अरहर की बीजों का उत्पादन लगभग 2.0 – 2.5 टन/हे0 व तना लकड़ी का उत्पादन 5.0 –6.0 टन/हे0 प्राप्त किया जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
कृषि विज्ञान केन्द्र, भगवानपुर हाट सिवान
(डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रिय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर)
मार्गदर्शक– डॉ0 मधुसुदन कुण्डु, निदेशक प्रसार शिक्षा

Printed By - ***New Print Zone***, Samastipur # 9771222492

प्र.शि.नि./प्रकाशन/304/2022-23

अरहर की उन्नत खेती

लेखकगण

डॉ. हर्षा बी. आर., डॉ अनुराधा रंजन कुमारी, डॉ. नंदिशा सी.बी.
शिवम् चौबे एवं प्रशांत कुमार

कृषि विज्ञान केन्द्र
भगवानपुर हाट, सिवान
डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर – 848125 (बिहार)

भारतवर्ष के सभी प्रदेशों में अरहर की दाल खाने में प्रयोग किया जाता है जो प्रोटीन का मुख्य स्रोत है। इसमें लगभग 20–21 प्रतिशत तक प्रोटीन के साथ–साथ कार्बोहाइड्रेट, वसा व खनिज पदार्थ भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। इसकी चूरी को जानवरों को खिलाने में उपयोग किया जाता है। इसकी लकड़ी का उपयोग टोकरी, छप्पर, मकानों की छत, ढक्कन व सब्जी उत्पादन के लिए झमड़ा बनाने में किया जाता है। अरहर की फसल उगाने से मृदा की उर्वरा शाक्ति में वृद्धि होती है क्योंकि इसकी जड़ों में उपस्थित राइजोबियम जीवाणु वातावरणीय नेत्रजन का मृदा में स्थिरिकरण करते हैं एवं पत्तियाँ झड़ कर मृदा में मिल जाती है, जो खाद का काम करती है। वायु द्वारा मृदा क्षरण रोकने में वायु प्रतिरोधक के रूप में भी अरहर का उपयोग किया जाता है।

पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए नम जलवायु की आवश्यकता होती हे। तापमान 20 डिग्री सेन्टीग्रेट से 40 डिग्री सेन्टीग्रेट एवं 65–100 डिग्री सेन्टी ग्रेड वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अरहर को सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। दलहनी फसलें मिट्टी के ऊपर शक्ति को उसके भौतिक एवं रासायनिक गुणों को सुधार कर बढ़ाती है। भारत दाल का सबसे बड़ा उत्पादक देश है फिर भी यहॉ दाल की हमेशा कमी रहती है। अरहर भारत में चना के बाद दूसरा महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। मुख्यतः यह महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, बिहार, उड़ीसा एवं तमिलनाडु में उगाया जाता है। जिसका भारत में अरहर 3.36 मि0 हेक्टेयर में उगाया जाता है। जिसका कुल उत्पादन 2.43 मिलियन टन है एवं उत्पादकता सिर्फ 651 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है जो कि काफी कम है। यहीं कारण है कि भारत सरकार के द्वारा राष्ट्रीय दलहन परियोजना चलाया जा रहा है ताकि दलहन का उत्पादन बढ़ाया जा सके। अरहर के उन्नत फसल के लिए निम्न बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

उन्नत प्रभेदः

अरहर में दो तरह के प्रभेद उपलब्ध है। एक खरीफ में लगाया जाता है दूसरा सितम्बर में लगाया जाता है।

प्रभेद	अवधि (दिन)	उपज (क्वि0/हे0)	बुआई का समय	विशेष गुण
राजेन्द्र अरहर–1	235–245	28–30	जुलाई के पहले सप्ताह से अगस्त के दुसरे सप्ताह तक	मैदानी क्षेत्रों में
बी0 आर 65	200–220	16–18	15 जून–10 जुलाई	मैदानी क्षेत्रों में
बहार	265–275	25–30	1–31 जुलाई	मैदानी क्षेत्रों में
उपास–120	125–140	12–15	1–31 जुलाई	मैदानी क्षेत्रों में
बिरसा अरहर–1	200–220	18–20	15 जून–15 जुलाई	पठारी क्षेत्रों के लिए
प्रगती (आइ0 सी0 पी0 एल –87)	130–135	20–22	01–31 जुलाई	मैदानी क्षेत्रों में
मारूथी (आई0 सी0 पी0 एल –8863)	150–180	15–20	01–31 जुलाई	मैदानी क्षेत्रों में
राजीव लोचन	170–180	18–20	01–31 जुलाई	मैदानी क्षेत्रों में

खेत का चुनावः हल्की दोमट, अच्छी जल निकास वाली भूमि इस फसल हेतु सर्वोत्तम है जिसका पी0एच0 मान 5 से 8 के बीच में हो।

सितम्बर अरहरः इसकी बुआई खरीफ अरहर के बाद सितम्बर माह में ऊपरी भूमि में की जाती है। समान्यतः कम अवधि वाले प्रभेद इसके बुआई के लिए उपयुक्त होता है।

उन्नत प्रभेदः

प्रभेद	अवधि (दिन)	उपज (क्वि0/हे0)	बुआई का समय	विशेष गुण
पुसा –9	230–240	25–30	25 अगस्त से 15 सितम्बर	स्ट्रालीटी मौजेक से अवरोधी
आई0 सी0 पी0 एल–151	110–120	20–22	25 अगस्त से 15 सितम्बर	स्ट्रालीटी मौजेक से अवरोधी
लक्ष्मी	220–230	18–20	25 अगस्त से 15 सितम्बर	स्ट्रालीटी मौजेक से अवरोधी
प्रगती (आई0सी0पी0एल–87)	130–135	20–22	25 अगस्त से 15 सितम्बर	उकठा रोग अवरोधी
मारूथी (आई0सी0पी0एल–8863)	130–135	15–20	25 अगस्त से 15 सितम्बर	उकठा रोग अवरोधी
अभया (आई0सी0पी0एल–332)	170–175	15–20	25 अगस्त से 15 सितम्बर	फली छेदक कीटों से अवरोधी

बीज दरः 20 कि0 ग्रा0 प्रति हे0 सितम्बर अरहर–50 कि0 ग्रा0/हे0

दूरीः 60×25 से0 मी0 25×15 से0 मी0 (सितम्बर अरहर)

बीजोपचारः बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम फफूंदनाशक दवा जैसे कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत से बीज का उपचार करें/बुआई के ठीक पहले फफूंदनाशक दवा से उपचारित बीज को कीटनाशक तथा उचित राइजोबियम कल्चर 250 ग्राम प्रति आधा एकड़ से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।

बुआई विधिः

- **मेंड पर बुवाई**

अरहर की बुवाई मेड़ पर कतारों में करना सबसे उत्तम रहता है। प्रतिकूल परिस्थितियों जैसे–जल निकासी की समुचित व्यवस्था का नहीं होना, खेत का समतल नहीं होना, चिकनी मिट्टी का होना या मृदा में निचली सतह का सख्त होना आदि जैसी परिस्थितियों में अनुसंधान के आधार पर पाया गया है कि अरहर की बुवाई मेड़ पर करने के लिए रिज बेड प्लान्टर का प्रयोग किया जा सकता है।

मेड़ पर बुवाई करने के लाभ

- जल निकासी की समुचित व्यवस्था न होने पर भी फसल खराब होने की संभावना कम रहती है।
- अधिक दिनों तक सुखा पड़ने की स्थिति में सिंचाई करने में आसानी।
- उकठा रोग से फसल का बचाव।
- निराई–गुड़ाई करने में आसानी रहती है।
- अरहर में कीटों का प्रकोप अधिक होता है। अतः कीटनाशियों के प्रयोग में असानी रहती है।
- मिलवा खेती करने के लिए उत्तम विधि।
- बीज व उर्वरक का समुचित उपयोग।

खरपतवार प्रबंधनः रासायनिक विधि से पेंडीमेथिलीन 1.0 किग्रा0 सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर की दर से अरहर बुआई के दो दिनों के अंदर छिड़काव करने पर खरपतवार का प्रबंधन हो जाता है। साथ ही 25 से 30 दिन बाद एक निराई–गुड़ाई हाथ से करने पर उपज 26 प्रतिशत तक बढ़ जाता है।

उर्वरक का प्रयोगः डी0 ए0 पी0 109 किग्रा0/हे0

पौधा संरक्षणः–

रोग एवं कीट प्रबंधन

अरहर में लगने वाले प्रमुख रोग एवं उनका नियंत्रण

क्र0 स0	रोग का नाम	रोकथाम
1	उकठा	कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/किग्रा0 + थिरम 2ग्राम/किग्रा0 बीज की दर से उपचारित करें। मिश्रित फसल के रूप में बुवाई करें। फसल चक्र अपनाए रोग प्रतिरोधी प्रजातियों का चयन करें। अरहर की बुवाई मेड़ पर करें एवं जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
2	बंध्यता मोजैक	मेटासिस्टाक्स का छिड़काव करें। रोगी व पहले से उगे हुई पौधों को नष्ट कर देना चाहिए। रोग रोधी किस्में जैसे– आईसीपी 7035 व आई सीपी 8862 की बुवाई करें।